Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

बाठेड़ा रावत एकलिंगदास सारंगदेवोत का मेवाड़ इतिहास में योगदान

शिल्पा मल्लिक* डॉ. हेमेन्द्र सिंह सारंगदेवोत**

* छात्रा, एम.ए.(उत्तरार्ध) (इतिहास) मेवाड़ विश्वविद्यालय, गंगरार, चित्तौड़गढ़ (राज.) भारत
** सह-आचार्य (इतिहास) मेवाड़ विश्वविद्यालय,गंगरार, चित्तौड़गढ़ (राज.) भारत

प्रस्तावना – मेवाड़ के सूर्यवंशी गुहिलोत सिसोदिया वंश की स्थापना मेवाड़ में 6-7वीं शताब्दी ई. में हुई और अपने पितृ पुरुष गुहिल (566 ई.) के नाम से यह वंश गुहिलोत कहलाया।[1] इस राजवंश के प्रसिद्ध शासक बप्पा रावल[2], खुमाण, जैतसिंह, महाराणा लाखा, कुम्भा, सांगा व प्रताप हुए। इनकी मुख्य वंशावली[3] इस प्रकार रही।

राजा गुहिल, भोज, महेन्द्र, नाग, शीलादित्य या शील (646 ई.), अपराजित, महेन्द्र द्वितीय, कालभोज बापा या बप्पा रावल, खुमाण, मत्तट, भर्तृभट्ट, सिंह, खुमाण द्वितीय, महायक, खुमाण तृतीय, भर्तृभट्ट द्वितीय, अल्लट या आलू रावल (951 ई.), नरवाहन, शालिवाहन, शक्तिकुमार (977 ई.), अंबा प्रसाद, शुचिवर्मा, नरवर्मा, कीर्तिवर्मा, योगराज, वैरट, हंसपाल, वैरिसिंह, विजयसिंह, अरिसिंह, चोड़सिंह, विक्रमसिंह, रणसिंह या कर्णसिंह, रावल क्षेमसिंह, रावल सामंत सिंह, कुमारसिंह, मथनसिंह, पद्मसिंह, जैत्रसिंह, तेजसिंह, समरसिंह, रावल रत्नसिंह (1303 ई.), महाराणा हम्मीरसिंह (1326-1364ई.) महाराणा क्षेत्रसिंह या खेता (1364-1382ई)।

बड़वा देवीदान की ख्यात में मेवाड़ महाराणा लाखा की रानीयों व कुँवरों के नाम इस प्रकार दिये गये हैं[4]- 1 राव वीरमदेव खींची की पुत्री लखमादे कँवर, जिनके तीन पुत्र हुए-चूण्डा, राघवदेव, दुल्हा। 2 राव भीमसिंह चौहान की पुत्री प्यार कँवर, जिनके दो पुत्र हुए-अज्जा, डुंगर सिंह। 3 राव चूण्डा(चूड़ा) राठौड़, मण्डोर की पुत्री चम्पा कँवर जिनसे एक पुत्र और दो पुत्रियाँ हुई - मोकल, राजकँवर, करमेती। 4 राव डुंगर सिंह देवड़ा की पुत्री राव कँवर जिनसे तीन पुत्र हुए - उदो, भोम, नसो।

टोंकरा के बड़वा हम्मीरजी और राणीमंगा खेमराजजी की पोथी के संदर्भो से सोलंज ठिकाने की तवारीख बतलाती है कि चुण्ड, राघवदेव, व अज्जा, ये तीनों महाराणा लाखा की पाटवी रानी खींचणजी लखमादे कंवर के पुत्र थे।[5]
चित्तौड़-उदयपुर का पाटनामा के अनुसार..... महाराणा जी श्री लाषाजी के घरे गागरोण की षीचण करमावती कवर- उत की जी के बेटा चोडोजी 1 राघव देवजी 2 दुजी राठौड़ मंडोवरी गेगकवर जी के बेटा मोकलजी 3 तीजी देवड़ी सीराही री देउबाई जी के बेटा दुलोजी 4 चोथी देवड़ी अणतुबाई जी के बेटा मेरोजी 4 सीधोजी 5 अजोजी 6 डुगरसीजी 7 पाचमी डाभी देलुबाई जी के बेटा रूदरोजी 8 दुरगोजी 9 परबतजी 10 कहनोजी 11 चठी सांषली सहजाबाई जी के बेटा भीमजी 12 करणजी 13 केहरजी 14 सातमी राठौड़ मंडोवरी गेग कवरजी के बेटा मोकल जी 15 नीसलजी 16 माहाराणाजी श्री लाषाजी रे राजलोक छव 6 छव माहाराणीया थी।[6]
मुहणोत नैनसी की ख्यात में महाराणा लाखा के सात पुत्रों के नाम दिए गये हैं- चूण्डा, राघवदेव, उदा, रूदा, दुल्हा, गजसिंह, डुंगरसिंह। परन्तु इसमें अज्जा का नाम भूल से नहीं दिया गया है।[7]इतिहासकार डॉ. गोरीशंकर हीराचन्द ओझा ने वीर विनोद और ख्यातों के आधार पर नौ पुत्रों[8] के नाम दिए हैं-

चूण्डा – इनके वंशज चूण्डावत कहलाये जिनमें जग्गावत, सांगावत, मेघावत व कृष्णावत और कान्धलोत, मौजावत, आसावत प्रमुख उपशाखाएँ रही हैं। आमेट, देवगढ़, बेगूँ, सलुम्बर, कोशीथल, मेजा, बेमाली, भैंसरोड़गढ़, कुराबड़, आसीन्द, चावण्ड, भदेसर, लुणदा, बम्बोरा, बस्सी, राजाजी का करेड़ा, भगवानपुरा, लसाणी, संग्रामगढ़, ताल, थाणा, चिताम्बा, भादु, साड़ास, झालरा, बडु, सैलागुढ़ा, भोपजी का खेड़ा, कोटड़ी, ज्ञानगढ़ आदि ठिकाने चूण्डावतों के रहे हैं।[9]

राघवदेव – राठौड़ रणमल व उनके साथी राठौड़ों द्वारा षडयंत्र करके चित्तौडगढ़ में मार दिए गये।[10] इनकी छत्री चित्तौडगढ़ दुर्ग पर सिसोदियों की कुलदेवी बाणमाता मन्दिर के निकट स्थित है। इनको सिसोदिया वंश का पहला 'पितृ' मान कर अपार श्रद्धा के साथ इनकी पूजा की जाती है।[11] सोलंज ठिकाने की तवारीख के अनुसार 'कुँवर कलेशजी (कलशजी)के बाद दूसरे पूर्वज राघवदेवजी सिसोद कुल में कुँवारे मारे गये, सो पूजाते है।'[12] स्पष्ट है कि गुहिलोत सिसोदिया कुल के पहले पूर्वज बड़वा हम्मीरजी व राणीमंगा की पोथी के अनुसार कुँवर कलशजी है।

अज्जा – इनके ज्येष्ठ पुत्र सारंगदेव से सारंगदेवोत शाखा का प्रादुर्भाव हुआ जो कि 'सारंगदेवोत अज्जावत' कहलाये। इनके मेवाड़ में स्थित मुख्य ठिकाने इस प्रकार रहे हैं- कानोड़, बाठेड़ा, पराणा, मादड़ी, नैनवारा, भाणपा, कच्छेर, अचलाना, औनाडसिंहजी की भागल, कराणा, लवारतलाई, तलाउ, गुड़ा, शोभजी का गुड़ा, बांसा, सिसवी, कचुमरा, खेड़ी, देवरी, नया तलाब, सारण, मोड़ा का तलाव, लक्ष्मणपुरा, रचका का कुआँ, रावतपुरा, कालाखेत, गोपालपुरा, महासिंहपुरा।[13] इस सारंगदेवोत शाखा की एक स्वतंत्र स्टेट देवमूँगा या देवउमगा(मगध) की स्थापना 17वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में बिहार में की गई।[14]

ठिकाना बाठरड़ा – बाठरड़ा सारंगदेवोत सिसोदियों का द्वितीय श्रेणी का ठिकाना रहा है। महाराणा रायमल (1473-1507 ई.) के समय रावत सारंगदेव प्रथम ने सूरजमल खेमकरणोत की सहायता से बाठरड़ा और उसके

आस-पास के क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया था। कई वर्षो तक बंबोरा इनकी वतन-जागीर रही। महाराणा जगतसिंह प्रथम (1628-1652ई.) और महाराणा राजसिंह प्रथम (1652-1680ई.) कालीन जागीरदारों की पट्टा बहियों से विदित होता है कि उस समय बाठरड़ा सारंगदेवोतों के पट्टे में नहीं था। महाराणा संग्रामसिंह के समय रावत महासिंह के छोटे भाई सूरतसिंह को यह ठिकाना मिला।[15] रावत सूरतसिंह की मृत्यु के बाद उनके पौत्र जोगीराम (वि.स. 1798) 1741 ई. में गद्दी पर बैठे।

बाठेड़ा रावत एकलिंगदास सारंगदेवोत-इनका जन्म (वि.स. 1802) 1753 ई. में हुआ। कुँवरपदे में एकलिंगदास महाराणा हम्मीरसिंह द्वितीय (1773-1778 ई.) की सेवा में उदयपुर में ही अधिकांशत: रहा करते थे। अपने पिता जोगीराम की मृत्यु के बाद (वि.स. 1842) 1785 ई. में बाठरड़ा की गद्दी पर बैठे। उस समय मेवाड़ की बागडोर महाराणा भीमसिंह के हाथ में थी। महाराणा भीमसिंह (1778-1828 ई.) के काल में भी रावत एकलिंगदास महाराणा की सेवा में अधिकाशत: उदयपुर ही रहा करते थे। चूण्डावत व शक्तावतों के बीच पहले से ही मनमुटाव था। प्रधान सोमचन्द गांधी ने भीण्ड़र व लावा-सरदारगढ़ के शक्तावतों का पक्ष लेकर चूण्डावतों को क्षीण करने का प्रयास किया। इस पर सलुम्बर रावत भीमसिंह ने सोमचंद गांधी को मरवाने का निश्चय कर इसके लिए एकलिगंदास से बातचीत की परन्तु वह राजी नहीं हुए।[16]

(वि.स. 1846) 1789 ई. में कुराबड रावत अर्जुनसिंह और चावण्ड रावत सरदारसिंह चुण्डावत ने महलों में पहुँचकर सोमचंद का काम तमाम कर दिया। रावत एकलिंगदास सारंगदेवोत ने चूण्डावतों का साथ छोड़ दिया। इसलिए वे उनसे नाराज रहने लगे। तवारीख बाठरड़ा में लिखा है कि सलुम्बर रावत भीमसिंह, कुराबड़ रावत अर्जुनसिंह और चावण्ड रावत सरदारसिंह आदि चूण्डावतों ने एक दिन एकलिंगदास को दावत पर बुलाया और उन्हें खाने में विष मिलाकर दे दिया जिससे उनकी मृत्यु (वि.स. 1852) 1795 ई. में हो गई। इनके तीन पुत्र हुए- मोहब्बतसिंह, गोकुलदास व गिरवरसिंह। गिरवरसिंह को मोड़ा तालाब भाई-बंट में जागीर में मिला। रावत एकलिंगदास की पुत्री का प्रथम श्रेणी के 16 उमरावों में से एक बिजौलिया के पंवार जागीरदार से विवाह करवाया।[17]

'मेवाड़ राज्य की वि.सं. 1800-1809 की जागीरदारां री जमा राशि का विवरण'[18] नामक दस्तावेज में अग्रानुसार विवरण प्राप्त होता है कि-

....

रावत एकलिंगदास जोगीरामोत बाठरड़ा

वीगत

- 4500)संवत् 1802 आषाढ़ सुद 15 ज्मे रू.5601
- 1595) संवत्1812 फागुण सुदी 15
- 1422) संवत् 1804 री सुदी..... 2251)संवत् 1811 जेठ सुद 15 ...ज्मे रू. 5201)
- 2100)संवत् 1814 पौष सुद 15.... 300)संवत्1815 काती बद 12 ज्मे रू. 2401)म्ये.

रावत एकलिंगदास बाठरड़ा का विवरण 'बाठेड़ा तवारीख' में अग्रानुसार मिलता है कि- '.....रावत एकलिंगदास कुँवरपदे से ही महाराणा श्री हमीरसिंह की सेवा में रहते थे। उसी तरह गद्दी पर बैठने के बाद भी ज्यादातर उदयपुर में ही महाराणा हमीरसिंह तथा महारणा भीमसिंह की सेवा में हाजिर रहे। इस समय मेवाड़ देश के प्रधान का काम शाह सोमचंद गांधी करते थे और रावत एकलिंगदास की निजी तौर पर इनसे बड़ी दोस्ती थी। सलुंबर रावत भीमसिंह ने किसी अदावत से शाह सोमजी को मारना चाहा तब सलुंबर रावत भीमसिंह रावत एकलिंगदास से बोले, 'आप किसी रीति से शाह को मार डाले तो हमारे ऊपर बड़ा अहसान होगा।' रावत एकलिंगदास को यह बात नागवारा गुजरी। फलत: इन्होंने ये कुल हाल महाराणा भीमसिंह को श्रवण करा दिया और शाह सोमचंद को सचेत करने के लिए उन्हें बता दिया। तब तो रावत भीमसिंह ने शत्रुतावश होकर रावत एकलिंगदास को मारने का उपाय शुरू किया। उपर्युक्त घटनाक्रम एवं अदावत से एक दिन सलुंबर रावत भीमसिंह ने कुराबड़ रावत अर्जुनसिंह तथा चावंड रावत सरदारसिंह से मिलकर एक गोठ के आयोजन (खुशी की दावत) के बहाने से रावत एकलिंगदास को अपनी हवेली में बुलाया। कुछ देर तक राग-रंग होने के बाद खाना खाने के वक्त उपर्युक्त तीनों सरदारों ने अपने हाथ से रावत एकलिंगदास को संखिया(विष) मिला हुआ खाना खिलाया जिससे उसी रात उनका स्वर्गवास हो गया था। एकलिंगदास का जन्म वि.सं. 1810 में हुआ और वि.सं. 1852 में जहर देने से 42 वर्ष की आयु में देवलोक हुए। उनके तीन पुत्र थे - मोहब्बतसिंह, गोकुलदास, गिरिवरसिंह।.....'

बाठरड़ा रावत एकलिंगदास की पुत्री नात या नेतकंवर बाईजी का विवाह गोगुन्दा राजराणा शत्रुशाल द्वितीय(वि.सं.1835-वि.सं.1910)के साथ हुआ था जिसका उल्लेख गोगुन्दा की ख्यात में अग्रानुसार है - '.....राजसाब सत्रुसालजी के ब्याव ई मुजब हुआ.....(दूसरा राजलोक /विवाह)सीसादणीजी नात कंवर बाई बाटरड़े रावजी अेकलिंगदासजी री बेटी 1853 वैसाष सुदी 7.....।'[19] राजराणा शत्रुशाल द्वितीय गोगुन्दा ने तीन विवाह किये थे जिसमें से द्वितीय विवाह बाठेड़ा किया था।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. कविराजा श्यामलदास, वीर विनोद, भाग-1, पृ. 239, 248 महाराणा मेवाड़ हिस्टोरिकल पब्लिकेशन ट्रस्ट सिटी पेलेस उदयपुर एवं राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर 2017 ; ओझा, उदयपुर राज्य का

इतिहास, भाग–1, पृ. 96–98 राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर 2022
2. कविराजा श्यामलदास, वीर विनोद, भाग–1, पृ. 234–238; (बप्पा रावल ने मौर्य शासक मान मौरी को पराजित करके 734 ई. में चित्तौड़गढ़ में अपनी राजधानी चित्रकूट नाम से स्थापित की); राठौड़ मोहब्बतसिंह, बापा रावल, पृ 2–35प्रताप शोध प्रतिष्ठान, उदयपुर
3. कविराजा श्यामलदास, वीर विनोद, भाग–1, पृ. 267–272; ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग–1, पृ. 217, 218, 243–258
4. सं. पालीवाल देवीलाल, मेवाड़ के राजाओं की राणियों, कुँवरों और कुँवरियों का हाल (बड़वा देवीदान कृत ख्यात), पृ. 3 प्रताप शोध प्रतिष्ठान, उदयपुर
5. सोलंज ठिकाने की तवारीख, पाना सं.4,ठिकाना सोलंज का संग्रह
6. सं. डॉ. मनोहर सिंह राणावत, चित्तौड़–उदयपुर का पाटनामा, भाग–2, पृ.सं.78नटनागर शोध संस्थान सीतामऊ
7. सं. ओझा गौरीशंकर हीराचंद, अनुवादक– दुग्गड़ रामनारायण, मुहणोत नैणसी की ख्यात, भाग–1, पृ. 58 राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर
8. देवगढ़ (मेवाड़) का इतिहास, पृ. 1अप्रकाशित तवारीख,प्रताप शोध प्रतिष्ठान, उदयपुर; कविराजा श्यामलदास, वीर विनोद, भाग–1, पृ. 308; ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग–1, पृ.270; राव शिवसिंह (महावीर सिंह, देवीसिंह) खेड़लिया (कुंठवा, नाथद्धारा, जिला राजसमन्द) की पोथी में सुरक्षित वंशावली के अनुसार महाराणा लाखा के तेरह पुत्र थे। प्रसिद्ध पुत्रों के अलावा इनमें से अन्य नाम इस प्रकार है: आहड़, सुलका (ठि. सायरों का खेड़ा, मड़का), डूंगर, सत्ता, रजोधर, सदो (बावजी चतरसिंह सारंगदेवोत संग्रह बोहेड़ा में सुरक्षित वंशावली की प्रतिलिपि)।
9. सं. जैतावत शशि, मासिक राज नोबल्स पत्रिका, राजसमन्द, वर्ष–6, अंक–7, पृ.4–5;विमला भंडारी, सलुंबर का इतिहास, पृ. 28, माण्डू सुल्तान होशंगशाह ने 42 लाख की वार्षिक आय का मंदसौर का जागीरी पट्टा रावत चूंडा को प्रदान किया;चूण्डावत उम्मेदसिंह, पत्त पत्त प्रमाण, पृ. 58–59
10. देवगढ़ (मेवाड़) का इतिहास, पृ.2 ; कविराजा श्यामलदास, वीर विनोद, भाग–1, पृ.319; ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास,भाग–1, पृ. 283; पालीवाल पुजारी प्रभुलाल, गुहिलवंशी सिसोदिया मेवाड़ महाराणाओं की कुलदेवी बायण माता एवं इष्टदेवी अन्नपूर्णा माता दुर्ग चित्तौड़गढ़ (राज), पृ. 10
11. Lieut col. Tod. James, Annals and Antiquities of Rajasthan,Vol.-I, pg. 325; बायण माता मन्दिर के पूजारी मुकेश पालीवाल का साक्षात्कार;पालीवाल पुजारी प्रभुलाल, गुहिलवंशी सिसोदिया मेवाड़ महाराणाओं की कुलदेवी बायण माता एवं इष्टदेवी अन्नपूर्णा माता दुर्ग चित्तौड़गढ़ (राज), पृ. 10
12. सोलंज ठिकाने की तवारीख, पाना सं.4
13. टोंकरा के बड़वा कृपाल सिंह की पोथी के अनुसार, पाना नं. 3–5
14. कानोड़ रावत प्रताप कृत हस्तलिखित डायरी 'कानोड़ का इतिहास' के अनुसार; तवारीख सार राजस्थान कानोड़, मेवाड़, पृ.21–22; बावजी चतरसिंह सारंगदेवोत संग्रह ठिकाना बोहेड़ा के अनुसार
15. सं. भाटी हुकमसिंह, मज्जमिका, महावजस प्रकाश, भाग–13, पृ. 49; सं.पाण्डेय डॉ. ललित, शोध पत्रिका, वर्ष–60, अंक–1–4, पूर्णांक 238–241, पृ. 296
16. बाठरड़ा की तवारीख, (प्र.शो.प्र.उ.),पृ.21–23
17. बाठरड़ा की तवारीख, (प्र.शो.प्र.उ.), पृ. 22–23;बाठेड़ा तवारीख (भाणावत संग्रह) के अनुसार रावत एकलिंगदास की पुत्री के विवाह का विवरण (बिजोलिया) प्राप्त होता है
18. वि.सं. 1800–1809 की जागीरदारां री जमा राशि का विवरण, राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर एवं अभिलेखागार फोटो जेरोक्स, 75– ग्रन्थांक परिग्रहण संख्या,पाना सं.34, रिकॉर्ड संग्रह प्रताप शोध प्रतिष्ठान, उदयपुर
19. सं. हुकमसिंह भाटी, मज्झमिका, गोगुन्दा की ख्यात, पृ.सं.33,प्रताप शोध प्रतिष्ठान, उदयपुर

****